## Nagajuna's Fundamental Wisdom (Chapter 24)

11. ब्रेंट'य'हेर'य'यथ'हेशहा

Faulty views of emptiness, लेबारमान्द्रमार्स्यसम्बद्धाः सम्बद्धाः

Will ruin those of little wisdom.

[रु.क्षेत्रःश्चैतातात्वचटारुशान्दा

[Like incorrectly seizing a snake; ম্বাঝামূবাঝাস্ট্রামানমান্ত্রী]

Like incorrectly casting a spell.]

## Chandrakirti's Clear Words (Chapter 24))

म्पारमिश्चारे क्षित्राचारेका मार्थिता मार्थिता का अर्थेटा चरावतु चेता इसस्य क्षेत्राचा केता है स्वार्थिता चार्य स्वारामिश्चार केता मार्थिता चार्या केता चार्या केता चार्या केता सम्बद्धा चारा केता चार्या केता स्वारामिश्चार क

Those who do not see the difference between the two truths in that way, but who see compositional phenomena as emptiness (i.e., as empty of inherent existence), since they see emptiness, they think that compositional phenomena do not exist.

षट त्र ब्रेंट या के के राया के के राया के के प्रतास के प्रता

Alternatively, they ascribe [inherent] existence to emptiness, and as a basis for that, also conceive of the inherent [existence] of things. Since both are faulty views of emptiness, [such views] certainly [ruin those of little wisdom. If someone asks how [do they ruin those of little wisdom]?

रे 'बैग'गाया हे 'घ्रस्य उर् 'ब्रेंट 'या क्षेत्र 'घ्रस्य प्रित 'या साधित 'कें 'बेश' हें गांक' के 'दे रिते कें। यदि 'योग' यर 'क्ष्र' यर 'यश्चर हो। है 'क्षर 'र्त्ता 'यर 'क्ष्र' यर 'र्त्ता 'यर 'क्ष्र' यर 'र्त्ता 'यर 'र्ता 'यर 'र्त्ता 'यर 'र्त्त

[देव:केव:सेट:च:प्रश]

[Chandrakirti says in his *Precious Garland*, Chapter 2, Verse 19]

क्रिंगपर्ने र्यमा सम्मानु मानु मानु

Wrongly apprehending this dharma ঝ'ঝাম্ম' কুঝ্য'ট্ট'কুব্'লুব'বা

Debilitates those who are not proficient ৭২°দুম-মাব্যমশ্রেম্বামী

They will sink into the uncleanliness क्षेग्नार्डा देर के केट प्रस्ता प्रमुख्य

Of nihilistic views.

वेश'नम्

इ. के.लाट. विषया क्रियान्य प्रत्या प्रत्या त्या प्रत्या त्या प्रत्या क्षेत्र प्रत्या क्षेत्र प्रत्या क्षेत्र प प्रत्याचेष्ठ क्षेत्र प्रत्या क्षेत्र प्रत्या प्रत्या प्रत्या प्रत्या क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र प्रत्या क्षेत्र प्रत्या क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र क्षेत्

So, if they do not hold that they deprecate all [phenomena] then how could these things be emptiness (i.e., empty of inherent existence), even after [the things] were perceived? Therefore, they abandon emptiness, saying that the meaning of not existing inherently is not the meaning of emptiness. Having abandoned [emptiness], owing to the karma of deprivation of the dharma, they will go to the lower realms.